B-2
L-10
Ancient India

वैदिक संस्कृति

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 BC)

<u>भौगोलिक विस्तार</u>: प्रारंभिक आर्य सप्त सैन्धव क्षेत्र (सिंधु और उसकी 7 सहायक नदियों में शामिल क्षेत्र) में आकर बसे।

* सरस्वती और दृषद्वती नदी के मध्य के क्षेत्र को ब्रह्मावर्त कहा गया।
* सरस्वती आर्यों की सबसे पवित्र नदी है इसे नदीतमा कहा गया है।
* ऋग्वेद में नदी सूक्त में 25 नदियों का उल्लेख है। जिसमें सरस्वती, सिंधु आदि नदियों का जिक्र है।
* सिंधु नदी को हिरण्यगर्भी कहा गया है।
* ऋग्वेद में हिमालय और चोटी मूजवन्त का उल्लेख मिलता है।
* उत्तर वैदिक काल में यह भौगोलिक विस्तार पूर्व तक हो चुका था अब उत्तर वैदिक काल के लोग विंध्य क्षेत्र और समुद्र से परिचित हो चुके थे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

ऋग्वैदिककालीन सामाजिक व्यवस्था

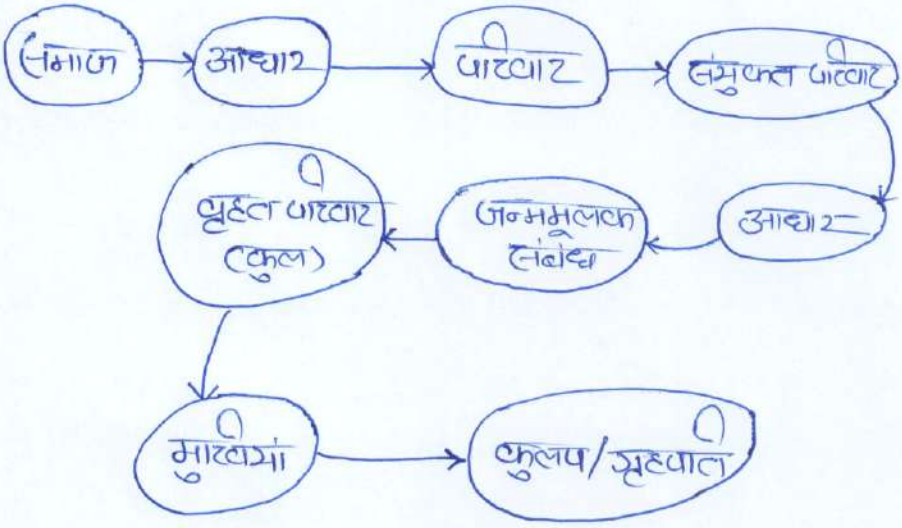

* ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था।
* ऋग्वेद के 10वें मंडल के पुरुष सूक्त में 'वर्ण' का उल्लेख है। जिसका अर्थ रंग होता है। ऋग्वैदिक समाज में 'वर्ण' का प्रयोग आर्यों और अनार्यों के रंग में अंतर स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।
* प्रारंभ में तीन वर्ण ब्रह्म, क्षत्र और विश् का उल्लेख मिलता है।
* महिलाओं की स्थिति
  - → आदर्शमय स्थिति
    हमें अपाला, घोषा, लोपमुद्रा, विश्ववारा आदि विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने कुछ मंत्रों की रचना की।
  - → पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। इनका उपनयन संस्कार होता था।
  - → पुरुषों के साथ राजनीतिक संस्थाओं में भी भाग लेती थीं।

KCS IAS KHAN GLOBAL STUDIES

→ शिक्षा का अधिकार प्राप्त था।
→ यज्ञ में भाग लेने का अधिकार
→ नियोग प्रथा का प्रचलन

* पुत्री को दुहिता कहा जाता था।
* आजीवन अविवाहित रहने वाली स्त्री को अमाजू कहते थे।
* विवाह एक पवित्र संस्कार/संस्था थी। तलाक का संदर्भ नहीं है।
* पुनर्विवाह का उल्लेख मिलता है।

* ऋग्वैदिक समाज में दास-प्रथा प्रचलित थी। यहाँ दासों को घरेलू कार्यों में लगाया जाता था।
* शिक्षा सामान्यतः गुरुकुल में दी जाती थी। जहां यह मौखिक रूप से प्रदान की जाती थी।
* विवाह के समय महिला जो सामान घर से लाती थी उसे वहतु कहा गया। दहेज प्रथा प्रचलन में नहीं थी

Note: ऋग्वैदिक समाज में अनुपस्थित था

⇓

बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विवाह-विच्छेद, जाति प्रथा, अस्पृश्यता, बाल विवाह आदि प्रचलन में नहीं था।

→ केवल 3 आश्रम का उल्लेख: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

* खाद्यान्न के रूप में यव (जौ) और धान्य का उल्लेख है।
* कपास का उल्लेख नहीं है पर ऊन का उल्लेख है।
* कई प्रकार के वस्त्रों जैसे वास, अधिवास और नीवि का उल्लेख है।
* दो प्रकार के आभूषण निष्क (सोने का आभूषण) और रुक्म का उल्लेख मिलता है।
* ऋग्वैदिककालीन मनोरंजन के साधन : पासा, रथदौड़, नृत्य, ढोल-ताशा
* ऋग्वैदिक काल में गाय एक महत्वपूर्ण वस्तु थी।
* ऋग्वैदिक काल का सबसे महत्वपूर्ण पशु अश्व था।
* गाय के लिए अघन्या शब्द का प्रयोग किया गया।
* मवेशियों को वापस पाने के लिए लड़े जाने वाले युद्ध को गवेषणा कहा जाता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

ऋग्वैदिककालीन आर्थिक व्यवस्था

आर्य घुमन्तु थे

⇓

झूम खेती ⟹ उपज केवल निर्वाह हेतु

⇓

अधिशेष की कमी

⇓

प्रभाव- व्यापार-वाणिज्य, उद्योग एवं शिल्प में भी दिखायी देने लगा।

माल-मूल स्वेच्छापूर्वक राजा को उपहारस्वरूप देते हैं, इसे बलि कहा जाता था

* धीरे-धीरे झूम खेती, स्थायी कृषि में परिवर्तित होती है जिसका वर्णन ऋग्वेद के चौथे मण्डल में है।
* ऋग्वैदिक के आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि एवं पशुपालन था।
* ऋग्वेद में पशु चारागाह के लिए गविष्मति/गव्य शब्द का प्रयोग हुआ है।
* पशु चोरी करने वाले के लिए पणि शब्द का प्रयोग हुआ है। पणि प्रारंभ में मवेशी चोर थे जो बाद में व्यवसायी बन गये।
* विनिमय के दो ही माध्यम में निष्क और गाय।
* खेती योग्य जमीन को उर्वरा (क्षेत्र) कहते थे।
* ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल में कृषि का संदर्भ मिलता है। ऋग्वेद में ही लांगल (हल) का उल्लेख मिलता है।
* धातु के लिए अयस शब्द का प्रयोग किया है। इससे प्रतीत होता है कि इनको धातुकर्म की जानकारी थी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR